कोटा आई हॉस्पिटल में उपलब्ध सेवायें

Cataract Services	**मोतियाबिन्द सेवायें**
Phacoemulsification with Foldable IOL	मोतियाबिन्द का फेको द्वारा बिना टांके ऑपरेशन एवं मुड़ने वाले लैन्स
Sutureless small incision cataract surgery with IOL	का प्रत्यारोपण
Special Surgical package for BPL card holders &	बी.पी.एल. कार्ड धारियों एवं मोबाइल आई केयर यूनिट के मरीजों के
Patients coming via Mobile Eye Care Unit	लिये विशेष रियायती दरों पर मोतियाबिन्द का बिना टांके ऑपरेशन
Glaucoma Services	**कालापानी सेवायें**
Non contact & Applanation tonometry	नॉन कॉन्टेक्ट एवं एपलेनेशन टोनोमीट्री द्वारा आँखों के दाब की जाँच
Automated computerized visual field analysis	स्वचालित कम्प्यूटराइज्ड दृष्टि क्षेत्र परीक्षण
Pachymetry & Gonioscopy	पैकीमीट्री एवं गोनियोस्कोपी
Digital Photographic Optic Disc analysis	डीजिटल फोटोग्राफिक ऑप्टिक डिस्क परीक्षण
Glaucoma filtering surgery with/without cat. surg.	कालापानी का लेज़र एवं ऑपरेशन द्वारा उपचार
Availability of all glaucoma medication	कालापानी की समस्त प्रकार की दवाईयाँ उपलब्ध
Retina Services	**रेटीना सेवायें**
Comprehensive Dilated Eye Examination	आँख के पर्दे की सम्पूर्ण जाँच
Digital Fundus Photography	डीजिटल फण्डस फोटोग्राफी एवं एन्जियोग्राफी द्वारा आँख के पर्दे की
Fundus Fluorescein Angiography	बीमारियों का आंकलन
Retina Surgery for Retinal Detachment,	डाइबिटिक रेटीनोपैथी, रेटीनल डीटेचमेंट एवं अन्य पर्दे की बीमारियों
Diabetic Retinopathy & IOFB Removal etc.	का ऑपरेशन द्वारा उपचार
Laser Treatment Services	**लेज़र उपचार सेवायें**
For Posterior Capsular Opacification,	लैन्स के पीछे की झिल्ली, कालापानी एवं आँखों के पर्दे का लेजर द्वारा
Glaucoma & Retina (Photocoagulation)	उपचार।
Paediatric Ophthalmology Services	**पीडियाट्रिक ऑफ्थेलमोलॉजी सेवायें**
Cataract surgery with IOL	बच्चों में मोतियाबिन्द का ऑपरेशन एवं लैन्स प्रत्यारोपण
Amblyopia evaluation & treatment	ऐम्बलायोपिया जाँच एवं उपचार
Squint evaluation & management	भेंगापन जाँच / निदान
Orthoptics & Congenital Ptosis correction	ऑर्थोप्टिक्स एवं बचपन से झुकी हुई पलकों की सर्जरी
Oculoplastic Services	**पलकों की प्लास्टिक सर्जरी सेवायें**
Entropion / Ectropion Correction	अन्दर / बाहर मुड़ी हुई पलकों का ऑपरेशन
Ptosis Correction	झुकी हुई पलकों का ऑपरेशन
Contact Lens Services	**कॉन्टेक्ट लैन्स सेवायें**
Disposable / Daily wear / Extended wear,	सभी प्रकार के कॉन्टेक्ट लैन्स उपलब्ध (रेग्युलर एवं कॉस्मेटिक)
Coloured & Cosmetic contact lens	
Other Services	**अन्य सेवायें**
Keratoplasty	नेत्र प्रत्यारोपण सुविधा उपलब्ध
Endolaser / Endonasal Dacryocystorhinostomy	दूरबीन एवं लेज़र द्वारा नासूर का आधुनिक उपचार
Conventional Dacryocystorhinostomy	नाखूने का साधारण विधि एवं ग्राफ्ट द्वारा उपचार
Dacryocystectomy & Pterygium surgery	सायनेप्टॉफोर द्वारा भेंगेपन की जाँच
Synaptophore evaluation	सोनोग्राफी द्वारा आँख के अन्दर की जाँच
Ultra sound A-scan biometry (Immersion Method)	कम्प्यूटर द्वारा चश्में के नम्बर की जाँच
Computerized Autorefraction	
Emergency Trauma Services	**आपातकालीन सेवायें**
24 Hours medical & surgical treatment	24 घण्टे उपलब्ध।

Cashless Services for Mediclaim Policy Holders

कोटा आई हॉस्पिटल

एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन

88, शक्ति नगर, कोटा (राज.)

Phones : 0744 - 2500044 (For Appointment), 2500767 (For Admit Patients)

Website : www.kotaeye.com E-mail : kotaeye@dil.in

Institutional Unit of Federation of Ophthalmic Research & Education Centres - INDIA

Patient Education

4

समझें

क्या है ?

दृष्टि दोष एवं भैंगापन

(Refractive Errors and Squint)

CONSULTANTS

डॉ. महेश पंजाबी
MBBS, MS (Eye), FCLF MORCE INDIA
Reg. No. RMC/6227

डॉ. संध्या महेश
MBBS, MS (Eye), FCLF MORCE INDIA
Reg. No. RMC/5056

डॉ. अनिल वर्मा
MS FMRF, FRCS (UK)
RETINA FELLOW-CHENNAI
Reg. No. RMC/3042

डॉ. सुभाष गुप्ता
MBBS, MS (Eye), FAEH
Reg. No. RMC/16133

डॉ. लीना श्रीवास्तव
MBBS, DO (FED), FCLC
Reg. No. RMC/19454

डॉ. मोना दरा
MBBS, MS (EYE)
Reg. No. RMC/20830

डॉ. जे.पी. गुप्ता
ANAESTHETIST
Reg. No. RMC/3335

OPTOMETRISTS

घनश्याम गुप्ता DOT (FED), COCL

संदीप सक्सेना DOT (FED)

ब्रजेश कुमार DOT (FED), FCLI

लक्ष्मीकांत तिवारी DOT (FED)

सौरभ गुर्जर DOT (FED)

अनिल यादव DOT (FED)

Green Vegetables a day Keeps Glasses Away.

दृष्टि दोष एवं भैंगापन (Refractive Errors and Squint)

दृष्टि दोष (Refractive Error) क्या होता है?

सामान्यतया जब हम किसी वस्तु को देखते हैं तब उस वस्तु से परावर्तित होकर (टकराकर) आने वाली समानान्तर प्रकाश किरणें हमारी आँखों के कॉर्निया एवं लैन्स से होती हुई रेटिना पर केन्द्रित होकर उसका प्रतिबिम्ब बनाती है जिससे हमें वह वस्तु एकदम साफ दिखाई देती है। किसी भी वस्तु के साफ दिखाई देने के लिए उस वस्तु से परावर्तित प्रकाश किरणों का रेटिना पर केन्द्रित होना अत्यन्त आवश्यक है जो मुख्यतः नेत्र गोलक (Eye Orbit) की अक्षीय लम्बाई (आँखों के आगे से पीछे तक की लम्बाई, Axial Length), कॉर्निया की गोलाई (ढाल, Curvature), वस्तु की अपवर्तन शक्ति (Refractive Power), तथा आँखों को घुमाने वाली मांसपेशियों की कार्यक्षमता (Convergence) के सामान्य रहने पर निर्भर करता है। इनमें से किसी भी मानक के सामान्य स्थिति में नहीं रहने से प्रकाश किरणें सीधे रेटिना पर केन्द्रित न होकर उसके आगे या पीछे केन्द्रित होती हैं जिससे विभिन्न प्रकार के दृष्टि दोष उत्पन्न होते हैं। दृष्टि दोष के कारण हमें वस्तुऐं साफ न दिखाई देकर धुंधली दिखाई देती हैं। यह बीमारी अनुवांशिक होती है। हमारे देश में करीब 20% बच्चे दृष्टि दोष से पीड़ित हैं।

मायोपिया (Myopia)

नेत्र गोलक की अक्षीय लम्बाई, वस्तु की अपवर्तन शक्ति या कॉर्निया की गोलाई के ज्यादा होने की वजह से मायोपिया नामक दृष्टिदोष होता है जिसे 'नियरसाईटेडनेस' भी कहा जाता हैं।

इस दृष्टि दोष में वस्तु से परावर्तित होकर आने वाली प्रकाश किरणें सीधे रेटिना पर केन्द्रित न होकर उसके आगे केन्द्रित हो जाती हैं जिससे मरीज को नजदीक की वस्तु तो साफ दिखाई देती है परन्तु दूर की वस्तुऐं धुंधली नज़र आती हैं।

लक्षण :- मायोपिया बच्चों में ज्यादा पाया जाता है। इसके मरीज सरदर्द एवं आँखों में खिंचाव की समस्या से परेशान रहते हैं। मायोपिया के मरीजों को टी.वी. पर तस्वीरें साफ देखने में तथा रात को गाड़ी चलाने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। अगर आप अपने बच्चे को आँखें को छोटी या बारीक करके दूर की वस्तु को स्पष्ट देखने की कोशिश करता देखें तो संभव है आपके बच्चे की आँखें कमजोर हों।

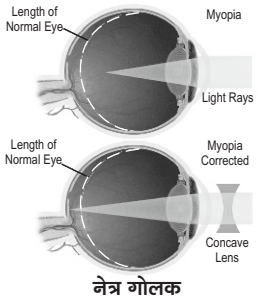

नेत्र गोलक

उपचार :- कॉनकेव लैंस के चश्मे अथवा कॉन्टेक्ट लैंस की मदद से प्रकाश किरणों के केन्द्र को रेटिना पर व्यवस्थित किया जा सकता है जिससे मरीज को साफ दिखाई देने लगता है।

हाइपरोपिया (Hyperopia)

नेत्र गोलक की अक्षीय लम्बाई, वस्तु की अपवर्तन शक्ति, या कॉर्निया की गोलाई के कम होने की वजह से हाइपरोपिया नामक दृष्टि दोष होता है जिसे 'फारसाईटेडनेस' भी कहा जाता हैं।

इस दृष्टि दोष में प्रकाश किरणें रेटिना के पीछे जाकर केन्द्रित होती हैं जिससे मरीज को दूर की वस्तु तो साफ दिखाई देती है परन्तु नजदीक की वस्तुऐं धुंधली नज़र आती हैं।

लक्षण :- हाइपरोपिया के मरीज मुख्यतः सरदर्द, आँखों में थकान, धूप में आँखें न खुलने, पढ़ने में परेशानी महसूस करने, भेंगापन, आदि जैसी समस्याओं से परेशान रहते हैं।

उपचार :- कॉनवेक्स लैन्स के चश्मे अथवा कॉन्टेक्ट लैन्स की मदद से प्रकाश किरणों के केन्द्र को रेटिना पर व्यवस्थित किया जा सकता है जिससे मरीज को साफ दिखाई देने लगता है।

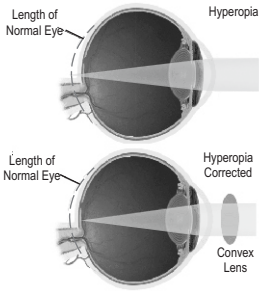

एस्टिग्मेटिज़्म (Astigmatism)

कॉर्निया के असामान्य ढाल या गोलाई की वजह से प्रकाश किरणें रेटिना के आगे या पीछे, एक की जगह दो बिन्दुओं पर, केन्द्रित हों तो इसे एस्टिग्मेटिज़्म कहते हैं। इस दृष्टि दोष में मरीज की दूर, पास या दोनों दृष्टियाँ कमजोर हो सकती हैं। यह दृष्टि दोष बच्चों एवं बड़ों दोनों में हो सकता है।

लक्षण :- इस दृष्टि दोष के मरीज सरदर्द, आँखों में थकान एवं खिंचाव, आँखों को बार-बार मसलना, सर को टेढ़ा करके या मोड़कर देख पाना जैसी समस्याओं से परेशान रहते हैं।

उपचार :- आवश्यकतानुसार कॉनकेव या कॉनवेक्स लैन्स के चश्में की मदद से प्रकाश किरणों के केन्द्र को रेटिना पर व्यवस्थित किया जा सकता है जिससे मरीज को साफ दिखाई देने लगता है।

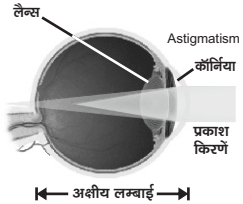

लेसिक लेज़र (Lasik Laser):- वर्तमान में, नम्बर वाले चश्मों के विकल्प के रूप में दृष्टि दोष को दूर करने के लिए लेसिक लेज़र शल्य चिकित्सा का भी उपयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया में लेज़र किरणों द्वारा कॉर्निया के स्वरूप में थोड़ा बदलाव करके प्रकाश किरणों के केन्द्र को रेटिना पर व्यवस्थित कर दिया जाता है जिससे मरीज़ को स्पष्ट दिखाई देने लगता है।

भैंगापन (Squint, Strabismus, तिरछी आँखें)

भैंगापन एक ऐसी आवस्था है जब दोनों आँखें एक ही दिशा में देखती हुई प्रतीत नहीं होती। मतलब, जब एक आँख सीधा देखती हुई प्रतीत हो तब दूसरी आँख या तो अन्दर (Esotropia), बाहर (Exotropia), ऊपर (Hypertropia), या नीचे (Hypotropia) की तरफ मुड़ी हुई प्रतीत होती हैं। बड़ों की अपेक्षा बच्चों में भैंगापन होने की सम्भावना बहुत अधिक होती है। प्रत्येक आँख की गति को नियंत्रित करने के लिए 6 माँसपेशियाँ आपस में सामंजस्य बिठाकर काम करती है जिससे आँखें समान रूप से सभी दिशाओं में घूम सकें। यदि इन 6 मांसपेशियों में से कोई ज्यादा कमजोर हो या ये आपस में सामंजस्य नहीं रख सकें तो भैंगापन होता है। कुछ मरीजों की आँखें हमेशा (Constant) भैंगापन लिए रहती हैं तथा कुछ मरीजों में यह भैंगापन समय-समय पर (Intermittent) नजर आता रहता है। यह जरूरी नहीं की भैंगापन सिर्फ खुली आँखों में या काम करते वक्त (Manifest Squint) ही नज़र आये, कुछ मरीजों में आँखें बन्द होने पर भी भैंगापन (Latent Squint) आ जाता है तथा आँखें खोलने पर स्वतः ही ठीक हो जाता है। भैंगेपन का एक प्रकार और होता है जिसमें मरीज जब किसी भी वस्तु को किसी भी दिशा या दूरी पर देखता है तब आँखों का आपसी तिरछापन समान (Concomitant Squint) रहता है जबकि कुछ मरीजों में आँखों का आपसी तिरछापन भी वस्तु की स्थिति या दूरी के हिसाब से बदलता (Incomitant Squint) रहता है। सामान्यतया आँखों में तिरछापन शुरुआती तीन वर्ष की उम्र तक हो सकता है। कभी-कभी यह बड़े बच्चों एवं व्यस्कों को भी हो सकता है परन्तु, शुरुआती तीन वर्ष एवं व्यस्कों में होने वाले भैंगेपन के अलग-अलग कारण होते हैं।

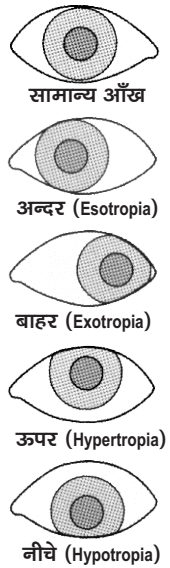

बचपन में होने वाले ज्यादातर भैंगेपन के कारण अज्ञात हैं। कुछ बच्चों एवं ज्यादातर व्यस्कों में होने वाला भैंगापन आँखों, आँखों की माँसपेशियों, दिमाग या तांत्रिकाओं में उत्पन्न विकार की वजह से हो सकता है।

निदान :- प्रत्येक शिशु का 9 महीने की उम्र में नेत्र परीक्षण आवश्यकता होता है। अगर आपके बच्चे को भैंगापन है तो इसका निदान शीघ्रातिशीघ्र हो जाना चाहिए जिससे नेत्र विशेषज्ञ समय रहते नेत्र ज्योति बचाए रखने का उपाय कर सकें।

उपचार :- भैंगापन के उपचार में मुख्य रूप से रोशनी में सुधार और मरीज के सामान्य व्यक्तियों की तरह दिखने पर ध्यान दिया जाता है क्योंकि आँखों में तिरछापन लिए मरीज अपने आपको असामान्य मानकर अवसाद ग्रस्त हो जाते हैं और अपना आत्मविश्वास खो बैठते हैं।

नेत्र विशेषज्ञ रोशनी में सुधार लाने एवं आँखों को सीधा करने के लिए निम्न उपचारों का चुनाव कर सकते हैं :-

1. उपयुक्त चश्मों का उपयोग 2. कुछ दवाऐं जो चश्मे से रोशनी बढ़ाने में मदद कर सकती हों 3. आँख की माँसपेशियों की शल्य चिकित्सा 4. ऑपरेशन से पहले व बाद में किये जा सकने वाले आँखों के व्यायाम।

भैंगेपन को रोका नहीं जा सकता परन्तु समय रहते इसका उपचार होने पर इसे ठीक ज़रूर किया जा सकता है।

एम्ब्लायोपिया (Amblyopia)

एम्ब्लायोपिया को सुस्त आँख (Lazy Eye) भी कहा जाता है। यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें बच्चे की दोनों आँखों में से एक आँख की दृष्टि क्षमता ज्यादा कमजोर होने की वजह से बच्चा उस आँख का उपयोग बहुत कम या नहीं करता है। बच्चे के सात वर्ष पूरे होने से पहले यदि इस आँख के दृष्टि दोष का उपचार न कराया जाये तो यह आँख हमेशा के लिए कमजोर एवं तिरछी रह जाती है। शिशु के जन्म लेने के पश्चात अगर शिशु किसी भी कारणवश अपनी दोनों आँखों का बराबर उपयोग नहीं करे तो हमारे मस्तिष्क में उपस्थित दृश्य की पहचान करने वाला हिस्सा 'जिसे विजुअल कॉर्टेक्स कहा जाता है' भी अपनी दृश्य परखने की क्षमता को पूर्णरूप से विकसित नहीं कर पाता इसलिए हम यह कह सकते हैं कि एम्ब्लायोपिया 'आँख की माँसपेशियों' की वजह से न होकर 'मस्तिष्क में उपस्थित विजुअल कॉर्टेक्स के पूर्ण विकसित नहीं होने के कारण होता है।

आई ऑक्लूज़न

उपचार :- एम्बलायोपिया का उपचार मुख्य रूप से स्वस्थ आँख के उपयोग को रोककर किया जाता है। इस उपचार में बच्चे की स्वस्थ आँख को आई पेच (Eye Patch) द्वारा बन्द कर दिया जाता है जिसे आई ऑक्लूज़न (Eye Occlusion) कहा जाता है। अब देखने के लिए मजबूरी में बच्चों को अपनी कमजोर आँख का उपयोग करना पड़ता है जिससे उस आँख में धीरे-धीरे सुधार आना शुरु हो जाता है। यह पेच कितने समय तक रखा जाना चाहिए इसका निर्णय नेत्र विशेषज्ञ आँख की कमज़ोरी का परीक्षण करके निर्धारित करते हैं जो कुछ हफ्तों से लेकर कुछ महीनों तक हो सकता है। कमज़ोर आँख में पूर्ण सुधार निश्चित ही बच्चे के सात वर्ष पूरा कर लेने से पहले उपचार कराए जाने पर ही संभव है। बाद में सुधार कितना होगा यह पूर्णत बच्चे की उम्र तथा एम्बलायोपिया की स्थिति पर निर्भर करता है।

कभी-कभी नेत्र विशेषज्ञ आई पेचिंग की जगह कुछ विशिष्ट आई ड्रॉप्स या विशेष प्रकार के चश्मों के उपयोग से स्वस्थ आँख की दृष्टि को धुंधला कर देते हैं जिससे बच्चा अपनी कमजोर आँख का उपयोग शुरु कर दे। यहाँ यह बताना ज़रूरी है कि कुछ लोग यह सोचते हैं कि आई पेचिंग से आँखों का तिरछापन दूर होता है परन्तु यह सत्य नहीं है। आई पेचिंग तथा एम्बलायोपिया के उपचार के अन्य उपाय केवल कमजोर आँख की दृष्टि क्षमता को सुधारने के लिए किये जाते हैं। तिरछेपन को दूर करने के लिए शल्य चिकित्सा करवानी होती है।

ध्यान दीजिए :-

दृष्टि दोष के मरीजों को दिए गये चश्में का निर्देशानुसार उपयोग करते रहना चाहिए, निश्चित अन्तराल पर आखों की जाँच करवाते रहना चाहिए, काम के दौरान प्रत्येक 2 घण्टे बाद थोड़ा आराम करना चाहिए, दूध, रंगीन (लाल, पीले) फलों एवं हरी सब्जियों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करना चाहिए, फास्ट फूड खाने तथा धूम्रपान करने से बचना चाहिए।

यदि आपके पास कोई भी सम्बन्धित सवाल या चिंता हो तो अपने नेत्र विशेषज्ञ से अवश्य सम्पर्क करें।